B.Ed. 2nd Year
Session – 2018-2020
Subject – Pedagogy of History
Course – 7 (A)/Unit – 2(d)
Topic – अनुभव-केन्द्रित पाठ्यक्रम
(Experience -Centred Curriculum)

Dr. Amod Kumar Sinha
(Assistant Professor)
Department of Education
A.N. D. College
Shahpur Patory
Samastipur

Lecture No. - 74

भूमिका

अनुभव–केन्द्रित पाठ्यक्रम में विषय–केन्द्रित पाठ्यक्रम की भाँति ज्ञान की राशि को पहले से निश्चित नहीं किया जाता है, वरन् बालकों की स्वभाविक रूचियों, रूझानों, क्रियाओं तथा अनुभवों को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। ऐसे पाठ्यक्रम में बालकों की मौलिक शक्तियों एवं रचनात्मक प्रवृत्तियों को विकसित करने के लिए ऐसे वातावरण का निर्माण किया जाता है जिससे वे सक्रिय रहते हुए अपने व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास कर सकें।

अनुभव–केन्द्रित पाठ्यक्रम की विशेषताएँ
(Merits of Expericenc-Centred Curruculum)

1. **मनोवैज्ञानिक (Psychological)** – ऐसा पाठ्यक्रम मनोवैज्ञानिक दृष्टि से उपयुक्त होता है। इसका कारण यह है कि इस प्रकार के पाठ्यक्रम में बालकों की स्वाभाविक क्रियाओं तथा अनुभवों पर विशेष बल दिया जाता है। उन्हें स्वयं क्रिया करके सीखने के लिए एवं अपनी बुद्धि व विवेक का अधिक से अधिक प्रयोग करने के लिए उनके समक्ष विभिन्न परिस्थितियों का निर्माण किया जाता है। इस प्रकार स्वयं प्रयास से सीखा हुआ ज्ञान स्पष्ट, प्रभावी एवं स्थायी होता है।

2. **लचीला (Flexible)**– अनुभव–केन्द्रित पाठ्यक्रम में विषय–केन्द्रित पाठ्यक्रम की तरह कोई पूर्व योजना नहीं होती है। ऐसे पाठ्यक्रम में शिक्षक बालकों की आवश्यकताओं के अनुसार क्रियाओं तथा अनुभवों की व्यवस्था करते हैं। इस प्रकार ऐसा पाठ्यक्रम अधिक लचीला होता है।

3. **जनतांत्रिक (Democratic)** – इस प्रकार के पाठ्यक्रम का आधार जनतांत्रिक होता है। इसमें बालक व्यक्तिगत एवं सामुहिक रूप से सक्रिय रहते हुए इच्छानुसार भाग लेते है। इससे उनमें स्नेह, सहानुभूति, सहयोग, सहनशीलता तथा नेतृत्व आदि अनेक जनतांत्रिक गुणों का विकास सहज रूप से होता है।

4. **सर्वांगीण विकास (All Round Development)** – ऐसे पाठ्यक्रम में बालक स्वयं विभिन्न परिस्थितियों में अपनी बुद्धि एवं विवेक का प्रयोग सीखने के लिए करता है। इससे उनमें मौलिक व रचनात्मक शक्तियों का विकास तेजी से होता है। इस प्रकार ऐसा पाठ्यक्रम बालकों के सर्वांगीण विकास में सहायक है।

5. **व्यक्तिगत विभिन्नता पर बल (Emphasis on Individual Differences)** – ऐसे पाठ्यक्रम की संरचना बालको की व्यक्तिगत विभिन्नता का ध्यान रखती है। इसका कारण यह है कि शिक्षकों द्वारा रचित विभिन्न परिस्थितियों में प्रत्येक बालक अपनी व्यक्तिगत रूचियों, रूझानों, प्रविित्तयों, तथा आवश्यकताओं के अनुसार अनुभव प्राप्त करता है एवं अपने जीवन से संबंधित करता है। इससे प्रत्येक बालक को अधिक से अधिक विकसित होने का अवसर प्राप्त होता है।

6. **सृजनात्मकता का विकास (Development of Creativity)** – चूँकि इस प्रकार के पाठ्यक्रम में बालकों कोविभिन्न समस्याओं पर सोचने–विचारने की स्वतंत्रता होती है, उनमे रटने की प्रवृत्ति का ह्रास होता है एवं उनकी सृजनात्मकता फलती–फूलती है।

अनुभव–केन्द्रित पाठ्यक्रम के दोष
(Demerits of Experience-Centred Curriculum)

1. **उद्देश्य की अस्पष्टता (Unlear Objectives)**– ऐसे पाठ्यक्रम में शिक्षण–उद्देश्य अस्पष्ट होता है। अतः शिक्षक एवं छात्र दोनों ही अंधकार में रहते हैं।

2. **अनुभवों के संगठन का अभाव** (Lack of Organisationof Experiences) – अनुभव–केन्द्रित पाठ्यक्रम में बालको को विभिन्न क्षेत्रों में किये गए विभिन्न अनुभवों का ज्ञान तर्कयुक्त एवं क्रमिक एवं व्यवस्थित रूप से नहीं दिया जा सकता है। अर्थात्त ऐसे पाठ्यक्रम में ज्ञान एवं अनुभवों का क्रम व संगठन व्यवस्थित नहीं हो पाता है।

3. **ज्ञान को प्रस्तुत करन हेतु अधिक श्रम एवं समय की आवश्यकता (Need of More Time and Energy for Presenting Knowledge)** – ऐसे पाठ्यक्रम में प्रत्येक बालक की रूचियों, रूझानों, आवश्यकताओं आदि का विचार करते हुए परिस्थितियों व क्रियाओं की योजना बनानी पड़ती है। इसमें समय एवं परिश्रम अधिक लगता है।

4. **सामाजिक अरूचि (Social Ampathy)**– अनुभव–केन्द्रित पाठ्यक्रम को सामान्यतः अभिभावक, संचालक, बालक एवं शिक्षक नहीं चाहते। इसका प्रमुख कारण कुशल एवं विशेष रूप से प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव है, जो बालकों में उचित एवं पर्याप्त मात्रा में अनुभव जागृत कर सकें।

5. **समन्वय में कठिनाई (Difficulty in Correlation)** – ऐसे पाठ्यक्रम में प्रत्येक बालक स्वाभाविक क्रिया द्वारा विभिन्न प्रकार के अनुभव प्राप्त करता है। इन अनुभवों में सह–संबंध स्थापित करना कठिन कार्य है।

6. **मूल्यांकन में कठिनाई (Difficulty in Evaluation)** – इस प्रकार के पाठ्यक्रम में बालकों द्वारा अर्जित विभिन्न अनुभवों का मूल्यांकन करने के लिए कोई निश्चित मापदंड तैयार नहीं हो पाया है। इससे ऐसे पाठ्यक्रम में बालकों के अनुभवों का मूल्यांकन करने में कठिनाई होती है।

समाप्त